MANANIYA CHAMAN LAL

The veteran Rashtriya Swayamsewak Sangh Pracharak Mananiya Chaman Lal was born on March 25, 1920, in Sialkot (now in Pakistan). He secured a gold medal in MSc (Zoology) in 1942 from the University of Punjab, Lahore. With job offers around, the young Chaman Lal renounced all comforts and lucrative career to serve for the independence of Bharat. Instead of taking up the job of Lectureship, he became a Sangh Pracharak at Kullu in 1942. Having shifted to Delhi, Chaman Lal ji swung into action in this direction. First of all, he spent days and nights catering to the needs of the people who were victims of partition of India. Arranging settlement, jobs, food and medicine for thousands of such refugees was his prime concern.

In his early days, he initiated the dream project of creating a global network of the Sangh under the guidance of Shri Madhavrao Mule, the then Punjab Prant Pracharak. Once given the charge of maintaining the contacts with the Indian Diaspora spread around the globe, Ma. Chaman Lal ji excelled by all means. After spending a jail term (following the ban on RSS between February 04, 1948 and July 11, 1949), he rose to become one of the senior Pracharaks of the Sangh who was responsible to facilitate the Indians going abroad. With meticulous efforts and sheer devotion, he soon created a database of Indians spread around 50 countries by the end of 1970s. Later, Delhi turned to be the main Centre of Vishwa Vibhag and Ma. Chaman Lal was synonymous to that Office. He used to spend hours and hours on phone calls and wrote thousands of letters to get Bharat connected with the Indian Diaspora in that pre-internet and pre-mobile phone era. Be it Australia or North America, his helping hands were ever ready. His connection was so deep and permanent with all Bharatvanshi that Sir Anerood Jugnauth, President of Mauritius delayed his son Pravind's wedding (the current Prime Minister of Mauritius) until Chaman Lal would come to attend it (1992).

Ma. Chaman Lal in his very few visits abroad was all the time ahead of his times. In Nairobi, Kenya (1977), he planted a tree and spoke on reforestation and warned the people of the havoc of natural disasters and the impending environmental crisis. All in the crowd pledged to plant two trees for one tree cut. Here, Chaman Lal- a gold medalist scientist was speaking! In the United Kingdom and the Netherlands (1995), he spoke to the Indian sisters and lauded their immense contribution in carrying forward the Bharatiya culture amongst their kids. In Rangoon (Yangon), he was an instant hit among school children as he intermingled with them with the inspiring stories of several Indian mahapurush. Ma. Chaman Lal ji in Southeast Asia (1996, 2001) connected deeply with Buddhism, and went to offer his respect to all Buddhist Mandirs. Nobody can ever forget the impact of his vision of bringing the children of royal court brahmanas of the Kingdom of Thailand to be trained in Tamilnadu as their ancestors had come from there about one thousand years ago. This connect was highly lauded by the royalty of Thailand.

From the first Shakha (gathering for prayers and commitment) of the Indians aboard a ship off the coast of Bombay to Nairobi in 1947 by his deputed person Jagadish Chandra Shastri to the last receiving by Hon'ble Prime Minister Shri Vajpayee at the doors of his residence in January 2003, the illustrious life of Ma. Chaman Lal spanned for six decades as a constant source of inspiration for all. He was a hero unsung. No wonder, his cremation in Delhi on February 11, 2003 was attended by over 1 lakh people from all walks of life (from a rickshaw puller to the then Vice President of India). It created a flutter in all newspapers and media as they did not have any clue of the person whose antim yatra had such large attendance of people walking miles and miles to have his last glimpse. Before that, at Keshav Kunj, Jhandewalan, a host of dignitaries including Hon'ble Prime Minister Shri Vajpayee, Deputy Prime Minister Shri L K Advani and its the then RSS Chief Shri K S Sudarshan offered floral tributes to the departed soul. Lauding the late leader's contributions, Shri Advani said (Ma. Chaman Lal) "served as a bridge between Swayamsewaks the world over and played a key role in the establishment of RSS centres in over 100 countries". A true Sanyasi and Karmayogi, Ma. Chaman Lal's legacy lives on in several organisations such as International Centre for Cultural Studies (ICCS) across the globe.

India Post is privileged to issue the Commemorative Postage Stamp on Ma. Chaman Lal, a karmayogi and selfless son of Mother India for taking ageless Indian values of service to humanity and empathy to all the corners of the world. The life and works of Ma. Chaman Lal is a saga of India, of the world.

Credits:

Stamp	:	Shri Sankha Samanta
FDC/ Brochure/ Cancellation	:	Ms. Nenu Gupta
Texts	:	Shri Amarjiva Lochan, General Secretary, International Centre for Cultural Studies (ICCS)

भारतीय डाक
India Post

डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS

मा. चमन लाल Ma. CHAMAN LAL



विवरणिका BROCHURE

माननीय चमन लाल

कुशल एवं अनुभवी राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ प्रचारक माननीय चमन लाल का जन्म 25 मार्च, 1920 को सियालकोट (अब पाकिस्तान) में हुआ था। उन्होंने 1942 में पंजाब विश्वविद्यालय, लाहौर से एमएससी (प्राणिविज्ञान) में स्वर्ण पदक प्राप्त किया। अनेक स्थानों से नौकरी के प्रस्ताव मिलने के बावजूद, युवा चमन लाल ने भारत की स्वतंत्रता के लिए सभी सुख–सुविधाओं और अपने उज्ज्वल करियर को त्याग दिया। व्याख्याता की नौकरी करने के स्थान पर वे 1942 में कुल्लू में संघ प्रचारक बन गए। दिल्ली में स्थानांतरित होने के बाद, चमन लाल जी इस दिशा में और भी सक्रिय हो गए। सबसे पहले उन्होंने भारत–विभाजन से पीड़ित लोगों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए दिन–रात एक कर दिया। ऐसे हजारों शरणार्थियों के पुनर्वास, नौकरी, भोजन और दवा की व्यवस्था करना उस समय उनकी प्राथमिकता थी।

उन्होंने अपने शुरुआती दिनों में तत्कालीन पंजाब प्रांत प्रचारक श्री माधवराव मुले के मार्ग दर्शन में संघ का वैश्विक नेटवर्क बनाने का महाअभियान शुरू किया। जब उन्हें दुनिया भर में फैले भारतीय प्रवासियों से संपर्क बनाए रखने का उत्तरदायित्व दिया गया, तो मा. चमन लाल जी इस कार्य में हर प्रकार से श्रेष्ठ सिद्ध हुए। 04 फरवरी, 1948 से 11 जुलाई, 1949 के बीच आरएसएस पर प्रतिबंध लगाए जाने के दौरान कारावास की अवधि बिताने के बाद, वे संघ के वरिष्ठ प्रचारकों में से एक हो गए, जो विदेशों में जाने वाले भारतीयों को सुविधाएं उपलब्ध कराने का उत्तरदायित्व संभालते थे। 1970 के दशक के अंत तक, अपने अथक प्रयासों और पूर्णसमर्पण के साथ कार्य करके, उन्होंने लगभग 50 देशों में फैले भारतीयों का डाटा बेस बना लिया। बाद में दिल्ली, विश्व विभाग का मुख्य केंद्र बन गया और मा. चमन लाल उस कार्यालय के मुख्य कर्ता थे। भारत को प्रवासी भारतीयों से जोड़कर रखने के लिए उस इंटरनेट और मोबाइल फोन रहित युग में वे फोन पर घंटों बात करते और हजारों पत्र लिखते। चाहे आस्ट्रेलिया हो या उत्तरी अमेरिका, सहायता के लिए उनके हाथ हमेशा तैयार रहते थे। सभी भारतवंशियों के साथ उनके संबंध इतने प्रगाढ़ और अटूट थे कि मॉरीशस के राष्ट्रपति सर अनिरुद्ध जगन्नाथ ने अपने बेटे प्रविंद (मॉरीशस के वर्तमान प्रधानमंत्री) के विवाह की तिथि तब तक के लिए आगे बढ़ा दी, जब तक कि चमन लाल उस विवाह में शामिल होने के लिए (1992 में) नहीं आ गए।

मा. चमन लाल ने बहुत कम विदेश यात्राएं कीं, लेकिन उनकी सोच हमेशा समय से आगे थी। केन्या के नैरोबी (1977) में उन्होंने पौधरोपण किया और उन्होंने पुनर्वनरोपण पर अपना वक्तव्य दिया तथा लोगों को प्राकृतिक आपदाओं के कारण होने वाले विनाश और मौजूदा पर्यावरण संकट के बारे में चेतावनी भी दी। भीड़ में उपस्थित सभी लोगों ने एक पेड़ कटने पर दो पेड़ लगाने का संकल्प लिया, जो कि चमन लाल–स्वर्ण पदक विजेता वैज्ञानिक की ही प्रेरणा थी। यूनाइटेड किंगडम और नीदरलैंड (1995) में उन्होंने भारतीय बहनों से बातचीत की और उनके बच्चों में भारतीय संस्कृति को आगे ले जाने में अपार योगदान की सराहना की। रंगून (यांगून) में, वे भारतीय महापुरुषों की प्रेरक कहानियां सुनाकर स्कूली बच्चों के बीच अत्यंत लोकप्रिय हो गए और उनसे घुल मिल गए। दक्षिण–पूर्व एशिया में मा. चमन लाल जी (1996, 2001) बौद्ध धर्म से गहराई से जुड़ गए और सभी बौद्ध मंदिरों में जा कर पूजा–अर्चना की। थाईलैंड साम्राज्य के शाही दरबार के ब्राह्मणों के बच्चों को तमिलनाडु में प्रशिक्षित करने के उनके विचार का ऐसा प्रभाव पड़ा कि उसे कोई कभी भी नहीं भूल सकता। उनके पूर्वज लगभग एक हजार साल पहले वहीं से आए थे। उनके इस कार्य की थाईलैंड के शाही परिवार द्वारा अत्यंत सराहना की गई।

1947 में नैरोबी जाने के लिए बंबई के तट पर एक जहाज पर सवार भारतीयों की पहली शाखा (प्रार्थना और प्रतिबद्धता के लिए एकत्रित जनसमूह) को उनके द्वारा प्रतिनियुक्त जगदीश चंद्र शास्त्री द्वारा विदा किए जाने से लेकर माननीय प्रधानमंत्री श्री वाजपेयी द्वारा जनवरी 2003 में घर के दरवाजे पर स्वागत किए जाने तक मा. चमन लाल का छह दशकों का गरिमामय जीवन सभी के लिए निरंतर प्रेरणा का स्रोत बना रहा। वे एक गुमनाम नायक थे। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि 11 फरवरी, 2003 को दिल्ली में उनके अंतिम संस्कार में समाज के सभी वर्गों (रिक्शा चालक से लेकर भारत के तत्कालीन उप राष्ट्रपति तक) के 1 लाख से अधिक लोगों ने भाग लिया। इस बात से सभी अखबारों और मीडिया में खलबली मच गई थी। उन्हें यह समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर ऐसा क्या था, जिसके कारण उनकी अंतिम यात्रा मे मीलों–मील पैदल चलकर इतनी बड़ी संख्या में लोग उनके अंतिम दर्शनों के लिए आ पहुंचे थे। इससे पहले, झंडेवालां के केशव कुंज में माननीय प्रधानमंत्री श्री वाजपेयी, उप प्रधानमंत्री श्री लाल कृष्ण आडवाणी और तत्कालीन आरएसएस प्रमुख श्री के. एस. सुदर्शन सहित कई गणमान्य व्यक्तियों ने दिवंगत आत्मा को पुष्पांजलि अर्पित की। दिवंगत नेता के योगदान की सराहना करते हुए श्री आडवाणी ने कहा– "(मा. चमन लाल ने) दुनिया भर के स्वयं सेवकों को जोड़ने के लिए सेतु का कार्य किया और 100 से अधिक देशों में आरएसएस केंद्रों की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। एक सच्चे संन्यासी और कर्मयोगी, मा. चमन लाल की विरासत दुनिया भर में इंटरनेशनल सेंटर फॉर कल्चरल स्टडीज (आईसीसीएस) जैसे कई संगठनों में आज भी विद्यमान है।

भारतीय डाक, एक कर्मयोगी और भारतमाता के निस्वार्थ सेवक मा. चमन लाल पर स्मारक डाक टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है, जिन्होंने मानवता की सेवा और सबके प्रति करुणा जैसे सनातन भारतीय मूल्यों को विश्व के कोने–कोने तक पहुंचाया। मा. चमन लाल का जीवन और उनके कार्य केवल भारत के लिए ही नहीं, बल्कि विश्व के लिए एक गाथा है।

आभार :

डाक टिकट : श्री शंख सामंत
प्रथम दिवस आवरण/विवरणिका/विरूपण : सुश्री नीनू गुप्ता
पाठ : श्री अमरजीव लोचन, महासचिव, इंटरनेशनल सेंटर फॉर कल्चरल स्टडीज (आईसीसीएस)

भारतीय डाक
India Post

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसे
Denomination	:	500 p
मुद्रित डाक टिकटें	:	172230
Stamps Printed	:	172230
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00